गोदान : कथ्य और शिल्प

श्याम नन्दन
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

Email: shyamnandan@mgcub.ac.in

हिन्दी उपन्यास (HIND4008)

स्नातकोत्तर, द्वितीय सेमेस्टर

❖ अनुक्रम

➢ गोदान

- **कथ्य :-** किसानों की विपन्नता, किसान-शोषण, महाजनी सभ्यता में किसान-शोषण, भाग्यवादी किसान, खेती की 'मरजाद', नए जमाने का युवा किसान, गोबर की प्रगतिशील चेतना, दलित-प्रश्न, जातिगत भेदभाव का विरोध, गौण विषय: अन्य समस्याएं
- **शिल्प :-** कथानक-संयोजन, भाषा एवं शैली, वर्ग-प्रतिनिधि पात्र, संवाद-योजना, देशकाल एवं वातावरण, उद्देश्य

➢ निष्कर्ष

➢ सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

❖गोदान

- सन् 1936 ई. में प्रकाशित
- मुंशी प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास
- यथार्थवादी उपन्यास परम्परा की सबसे महत्वपूर्ण कृति
- किसान-जीवन की त्रासदी का ज्वलंत दस्तावेज

❖ किसानों की विपन्नता

- **लोग दाने-दाने को मोहताज**
- **देह पर साबित कपड़े नहीं**
- **कमरतोड़ मेहनत के बावजूद भी गुजर नहीं**

❖किसान-शोषण

- जमींदारों और महाजनों के शोषण का शिकार
- फसल हो या न हो, लगान देना अनिवार्य
- नजराना, शगुन आदि की अदायगी
- आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु महाजनों के कर्ज का सहारा

❖ महाजनी सभ्यता में किसान-शोषण

- पूरी जिन्दगी सूद भरते रहना
- मूलधन का ज्यों का त्यों बचा रहना
- किसान से मजदूर में परिवर्तन का विश्वसनीय और यथार्थ चित्रण

❖भाग्यवादी किसान

- परम्परागत भाग्यवादी किसानों का प्रतिनिधि - होरी
- 'छोटे-बड़े भगवान् के घर से बनकर आते हैं'- भाग्यवाद
- 'हमने कुछ नहीं संचा तो भोगें क्या' - पूर्वजन्म का कर्म-फल
- अभावग्रस्त जीवन को अपने पूर्वजन्म का प्रतिफल मानना

❖ खेती की ‘मरजाद’

- ‘मजदूरी करना छोटा काम है।’
- खेती-किसानी की अपनी 'मरजाद' है।
- 'मरजाद' का भाव मजदूरी में बाधक

❖नए जमाने का युवा किसान

- नए जमाने का युवा किसान-प्रतिनिधि - गोबर
- शोषक शक्तियों के षड्यंत्र की भली-भांति पहचान
- शोषणकारी ताकतों का विरोध
- *'भगवान सबको बराबर बनाते हैं|'*
- पूर्वजन्म के कर्मों के फल से कोई छोटा-बड़ा नहीं बनता

❖ गोबर की प्रगतिशील चेतना

- शहर जाने के बाद प्रगतिशील चेतना का विकास
- बिरादरी, धर्म आदि शोषण के उपकरणों की पहचान
- 'यहाँ जिसके हाथ में लाठी है, वही गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है|'

❖दलित-प्रश्न

- दलित स्त्री सिलिया का दोहरा शोषण
- मातादीन के मुंह में हड्डी डालना और दलितों की प्रतिक्रया
- दलित स्त्री की इज्जत लेने वाला ‘धर्म-भ्रष्ट’

❖ जातिगत भेदभाव का विरोध

- दोहरे मानदंडों वाली व्यवस्था के प्रति दलितों की प्रतिक्रया
- दलित स्त्री के साथ सोने से मातादीन का धर्म 'सुरक्षित'
- दलित का छुआ पानी पीने से 'धर्म भ्रष्ट'
- जातिगत ऊँच-नीच के भेदभाव का विरोध
- कर्म-आधारित उच्चता ही वरेण्य

❖ गौण विषय : अन्य समस्याएं

- अन्तर्जातीय एवं प्रेम-विवाह
- स्त्री-शोषण
- धर्म-आधारित शोषण
- दहेज-प्रथा एवं अनमेल विवाह
- पारिवारिक-विघटन आदि

❖ शिल्प

कथानक संयोजन

- उपन्यास की मुख्य कथा - होरी की कथा
- नगर-कथा में प्रधानता - मालती-मेहता की कथा
- अन्य सभी सहायक, प्रासंगिक एवं गौण कथाएं

- ग्राम एवं नगर की दो समानांतर कथाएँ
- नगर कथा का ग्राम-कथा से सम्यक जुड़ाव नहीं
- ग्राम-कथा के प्रायः सभी सूत्र होरी से सम्बंधित
- प्रासंगिक अथवा गौण कथाएं, कथावस्तु-विकास में सहयोगी

❖ भाषा एवं शैली

- आम बोलचाल की भाषा
- उर्दू के शब्दों का बहुतायत प्रयोग
- मुहावरेदार भाषा
- पात्रानुकूल भाषा
- वर्णनात्मक एवं अन्य पुरुष शैली

❖वर्ग-प्रतिनिधि पात्र

- परम्परागत भारतीय किसान-वर्ग का प्रतिनिधि- होरी
- प्रगतिशील युवा किसानों का प्रतिनिधि – गोबर
- महाजन वर्ग के प्रतिनिधि - सहुआइन, दातादीन, झिंगुरी सिंह आदि
- जमींदार एवं पूँजीपति वर्ग के प्रतिनिधि - राय साहब अमरपाल सिंह एवं खन्ना
- दलित वर्ग के प्रतिनिधि - सिलिया, हरखू, कलिया
- ब्राह्मण वर्ग के प्रतिनिधि - दातादीन और मातादीन

- **सभी धर्म, जाति और वर्ग के पात्र**
- **प्रेमचंद सहित समस्त हिंदी साहित्य का अद्वितीय पात्र - होरी**
- **शोषणकारी शक्तियों के विरुद्ध संघर्षशील स्त्री पात्र - धनिया**
- ***''प्रेमचंद के नारी पात्रों में वह (*धनिया*) अन्यतम है।" – डॉ. रामविलास शर्मा***

❖ संवाद-योजना

- आम बोल-चाल के शब्दों से निर्मित बोधगम्य
- चित्रित परिवेश एवं पात्रों के अनुकूल
- प्रसंगानुकूल, सहज, स्वाभाविक और प्रभावशाली

❖ देशकाल एवं वातावरण

- युगीन जीवन के यथार्थ चित्रण में सफल
- पात्र, भाषा और संवाद सभी परिवेश के विश्वसनीय चित्रण में सहायक
- किसान से मजदूर में परिवर्तन की समस्या की समकालीनता

❖उद्देश्य

- महाजनी-शोषण के कारण किसान से मजदूर में परिवर्तन की त्रासदी का चित्रण
- किसानों का शोषण करने वाली शक्तियों को समाज के सम्मुख अनावृत करना

❖ निष्कर्ष

- महाजनी शोषण के फलस्वरूप किसान से मजदूर में परिवर्तन का विश्वसनीय और यथार्थ चित्रण
- किसानों की आत्महत्या के सन्दर्भ में गोदान का पुनर्मूल्यांकन अपेक्षित
- किसान-जीवन की त्रासदी का ज्वलंत दस्तावेज
- समस्त हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि

❖ सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

- गोदान - प्रेमचंद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- प्रेमचंद- कमल किशोर गोयनका, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली
- प्रेमचंद और उनका युग, डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

धन्यवाद